



Study AV Kand 7 Hindi

### अथर्ववेद 7.69.1

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।  
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु ॥1॥

(शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (नः) हमारा (वातः) वायु (वातु) चलना (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (नः) हमारा (तपतु) चमक की गर्मी (सूर्यः) सूर्य (अहानि) दिन, व्यर्थ न करने योग्य (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (भवन्तु) होओ (नः) हमारा (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (रात्री) रात (प्रति) की तरफ, के लिए (धीयताम्) धारण किया जाये (शम्) शांति, प्रसन्नता और कल्याण का देने वाला (उषाः) सूर्योदय से पूर्व की प्रातःकालीन किरणें (नः) हमारे लिए (व्युच्छतु) ज्ञान के लिए, अज्ञानता और अन्धकार को दूर करने के लिए चमकना ।

नोट: अथर्ववेद 7.69.1, यजुर्वेद 36.10 और यजुर्वेद 36.11 में अनेकों समानताएँ हैं। अथर्ववेद 7.69.1 की पहली पंक्ति यजुर्वेद 36.10 के समान है। अथर्ववेद 7.69.1 की दूसरी पंक्ति यजुर्वेद 36.11 के समान है।

व्याख्या:-

प्रकृति की विपरीत शक्तियाँ जैसे सूर्य तथा वायु, दिन तथा रात्रि, किस प्रकार हमारी शांति, प्रसन्नता और कल्याण के लिए कार्य करती हैं?

- बहती हुई वायु हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण देने वाली हो।
- चमके हुए सूर्य की गर्मी हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण देने वाली हो।
- दिन, जो व्यर्थ करने योग्य नहीं होता, हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण देने वाला हो।
- रात्रि भी हमारे लिए शांति, प्रसन्नता और कल्याण को देने के लिए धारण की जाये।
- सूर्योदय से पूर्व ही प्रातःकालीन किरणें भी हमारे जीवन में से ज्ञान के लिए, अज्ञानता और अन्धकार को दूर करने के लिए चमकने वाली हो।

जीवन में सार्थकता:-

सूर्य, वायु और मेघों के तीन आयाम कौन से हैं?  
जल चक्र का विज्ञान क्या है?  
कल्याणकारी कार्यों के लिए दिव्य प्रेरणा क्या है?  
प्राणायाम का अध्यात्मिक विज्ञान क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



**अधिभौतिक अर्थ :-** सूर्य की गर्मी, बहती हुई वायु और गरजते हुए बादल जो सारे संसार पर वर्षा करते हैं, तीनों जल चक्र के तीन तत्त्व हैं। जो धरती पर सभी जीवों के सर्वोच्च कल्याण का विज्ञान हैं और जिसके बिना धरती पर जीवन असम्भव हो जायेगा।

**अधिदैविक अर्थ :-** तीन दिव्य शक्तियाँ, जिनकी प्रकृति एक-दूसरे से भिन्न है, सबके कल्याण के लिए पूर्ण सद्भाव के साथ इकट्ठे कार्य करती हैं, इसका सामान्य कारण है कि वे दिव्य हैं और उनके कोई व्यक्तिगत हित व अहंकार नहीं टकराते। सूर्य की ऊर्जा गरम होती है, वायु और जल की प्रकृति ठंडी होती है। इस कार्य प्रणाली से हमें एक दिव्य प्रेरणा लेनी चाहिए कि अपनी-अपनी प्रकृति के बावजूद, हम सबको सबके भले के लिए ही कार्य करना चाहिए।

**आध्यात्मिक अर्थ :-** आध्यात्मिक मार्ग पर एक योगी प्राणायामा अभ्यासों के द्वारा अपने प्राणों अर्थात् श्वासों का विकास कर लेता है तो वह इससे दिव्य प्रकाश अर्थात् ज्ञान और उच्च चेतना की गर्मी का विकास कर लेता है। सूर्य की तरह वह बल की वृद्धियों के बादलों को तोड़कर सबके कल्याण के लिए दिव्यता की वर्षा करता है।

### अथर्ववेद 7.113.1

तृष्टिके तृष्टवन्दन उदमूं छिन्धि तृष्टिके।  
यथा कृतद्विष्टासोऽमुष्मै शेष्यावते।।1।।

(तृष्टिके) हे इच्छाओं (तृष्ट वन्दन) लालच और इच्छाओं के पीड़ित के द्वारा प्रेम और सम्मानित होती हुई (उत् अमूम) उस पीड़ा को (छिन्धि) काट दो, जड़ से उखाड़ दो, नष्ट कर दो (तृष्टिके) हे इच्छाओं (यथा) जिससे कि (कृत द्विष्टा) शत्रुता का नाशक (असः) हो (अमुष्मै) उसके लिए (शेष्यावते) योग का जोरदार व्यक्ति।

व्याख्या:-

इच्छाओं से कौन प्रेम करता है?

इच्छाओं से हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए?

हे इच्छाओं! आप लालच और इच्छाओं के पीड़ित के द्वारा प्रेम की जाती हो और सम्मानित होती हो। हे इच्छाओं! कृपया उस दर्द को (जो आपके भीतर से पैदा होती है) काट दो, जड़ से उखाड़ दो और नष्ट कर दो, जिससे योग का जोरदार व्यक्ति शत्रुता और ईर्ष्या आदि को नष्ट करने योग्य बन सके।

जीवन में सार्थकता:-

इच्छाओं का दुष्क्र का क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



इच्छाओं का सबसे प्रबल लक्षण यह है कि वे, पूरी हुई या अधूरी, हमें पीड़ित ही करती हैं। इच्छाओं के साथ जीवन जीने की प्रक्रिया में हमारा जीवन भौतिकवादी लक्ष्यों के लिए ही व्यर्थ चला जाता है। एक के बाद एक ये इच्छाएँ हमें असंख्य कष्टों, कठिनाईयों और असंतुलन के दुष्चक्र में फंसा देती हैं। जो लोग आध्यात्मिकता के जिज्ञासु होते हैं उन्हें इच्छाओं के मार्ग का त्याग कर देना चाहिए।

सूक्ति :- (तृष्टिके तृष्ट वन्दन – अथर्ववेद 7.113.1) हे इच्छाओं! आप लालच और इच्छाओं के पीड़ित के द्वारा प्रेम किये की जाती हो और सम्मानित होती हो।

### अथर्ववेद 7.113.2

तृष्टासि तृष्टिका विषा विषातक्यसि।  
परिवृत्ता यथासस्यृषभस्य वशेव।।2।।

(तृष्टा) तुम इच्छाएँ (असि) हो (तृष्टिका) इच्छाओं में जड़ित (विषा) जहरीली (विषातकी) अपने जहर से जीवन को दर्दनाक बना देती है (असि) हो (परिवृत्ता) सभी दिशाओं से उखाड़ दो (मन के अन्दर अन्तिम तन्तु तक को) (यथा) जिससे (अससि) हो सके (ऋषभस्य) शक्तिशाली और बलशाली के (वश) नियंत्रण में (इव) जैसे कि।

व्याख्या:-

इच्छाओं के क्या खतरे हैं?

इच्छाओं को कौन नियंत्रण में रख सकता है?

हे इच्छाओं! आप लालची हो (क्योंकि आप स्वयं ही इच्छाओं में जड़ित हो); आप विषैली हो और अपने विष से जीवन को दर्दनाक बना देती हो। कृपया जड़ से उखड़ जाओ (हमारे मन के अन्दर अन्तिम तन्तु तक) जिससे आप शक्तिशाली और बलशाली (योग पुरुष) के नियंत्रण में रह सको।

जीवन में सार्थकता:-

इच्छाएँ दर्दनाक और विषैली क्यों होती हैं?

इच्छाएँ अनेक कारणों से दर्दनाक और विषैली होती हैं।

1. इच्छाएँ, यदि अधूरी रहें, तो निराशा का कारण बनती हैं।
2. इच्छाएँ, यदि पूरी भी हो जायें, तो भी उनके खोने या समाप्त होने का भय उत्पन्न होता है जो सुखों का अन्त करता है।
3. इच्छाएँ अन्तहीन होती हैं और हमारा समूचा जीवन उनकी पूर्ति में ही व्यर्थ हो जाता है जो भौतिक प्रकृति की होती है।
4. इच्छाएँ अक्सर शत्रुता और ईर्ष्या पैदा करती हैं।
5. इच्छाएँ (भौतिक प्रकृति की) हमें आत्मानुभूति के आध्यात्मिक मार्ग से पथ भ्रमित कर देती हैं, जो कि मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य है।
6. इच्छाएँ अपने पीड़ित को अनेक प्रकार के कार्य, अच्छे और बुरे दोनों, करने के लिए मजबूर करती हैं जिससे उन्हें उनके फल प्राप्त हो सकें अर्थात् अच्छे के लिए अच्छा और बुरे के लिए बुरा। कुछ फल

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



तो तुरन्त मिल जाते हैं जबकि कुछ फलों के लिए अगले जन्मों की प्रतीक्षा करनी होती है। इस प्रकार इच्छा करने वाला व्यक्ति सदैव जन्म और मृत्यु के चक्र में ही फंसा रहेगा और मुक्ति के लक्ष्य से दूर रहेगा।

सूक्ति :- (तृष्टा असि तृष्टिका विषा विषातकी असि – अथर्ववेद 7.113.2) हे इच्छाओं! आप लालची हो (क्योंकि आप स्वयं ही इच्छाओं में जड़ित हो); आप विषैली हो और अपने विष से जीवन को दर्दनाक बना देती हो।

**This file is incomplete/under construction**